अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : पाँचवीं- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) भवनपति के 10 दण्डक में कषाय होते हैं-
(क) 4 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 1 (क)

(ii) तीसरे देवलोक के देवों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति है-
(क) 1 पल्योपम झाझेरी, 2 सागरोपम झाझेरी (ख) 7 सागरोपम, 10 सागरोपम
(ग) 2 सागरोपम, 7 सागरोपम (घ) 10 सागरोपम,14 सागरोपम (ग)

(iii) पहली और दूसरी नारकी में लेश्या है-
(क) नील लेश्या (ख) कापोत लेश्या
(ग) कृष्ण लेश्या (घ) तेजो लेश्या (ख)

(iv) तेइन्द्रिय की अवगाहना होती है-
(क) 12 योजन (ख) 4 गाउ
(ग) 1 गाउ (घ) 3 गाउ (घ)

(v) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में पर्याप्ति होती हैं-
(क) 4 (ख) 6
(ग) 3 (घ) 5 (ख)

(vi) कौनसा गुणस्थान झूले के समान आता जाता रहता है-
(क) छठा-सातवाँ (ख) पाँचवाँ-तेरहवाँ
(ग) आठवाँ-नौवा (घ) ग्यारहवाँ-चौदहवाँ (क)

(vii) किस गुणस्थान तक आठ कर्मों की निर्जरा होती है-
(क) 10 से 14 (ख) 8 से 12
(ग) 1 से 10 (घ) 10 से 12 (ग)

(viii) वेदनीय कर्म के उदय से परीषह होते हैं-
(क) 12 (ख) 11
(ग) 13 (घ) 22 (ख)

(ix) कौनसे गुणस्थान से जीव उपशमक व क्षपक कहलाते हैं-
(क) 10 वें (ख) 12 वें
(ग) 11 वें (घ) 9 वें (घ)

(x) पाँचवें गुणस्थान में योग होते हैं-
(क) 9 (ख) 12
(ग) 14 (घ) 15 (ख)

(xi) बाटा बहती अवस्था में गुणस्थान हैं-
(क) 4 (ख) 5
(ग) 3 (घ) 6 (ग)

(xii) सर्वार्थसिद्ध का देव भविष्य में कितनी द्रव्येन्द्रियाँ करेगा-
(क) असंख्यात (ख) अनन्त
(ग) सौलह (घ) आठ (घ)

(xiii) वायुकाय के जीव ने अतीत काल में द्रव्येन्द्रियाँ की-
(क) अनन्त (ख) आठ
(ग) दस (घ) बारह (क)

(xiv) योग आत्मा में कितनी आत्मा की नियमा होती है-
(क) 3 (ख) 2
(ग) 4 (घ) 5 (ग)

(xv) बिना मन वाले जीव होते हैं-
(क) सन्नी (ख) असन्नी
(ग) दोनों (घ) दोनों नहीं (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) सभी युगलिक छहों दिशाओं से 288 भेदों का आहार लेते हैं। (हाँ)

(ii) सिद्ध भगवान के शरीर होता है। (नहीं)

(iii) पृथ्वीकाय की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट 22 हजार वर्ष की है। (हाँ)

(iv) नारकी और देवता के सभी दण्डकों में चारों संज्ञा पायी जाती हैं। (हाँ)

(v) चौथे गुणस्थान की स्थिति जघन्य एवं उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त है। (नहीं)

(vi) सातवें गुणस्थान में 6 लेश्या पायी जाती है। (नहीं)

(vii) पहले से चौथे गुणस्थान तक चारित्र नहीं होता है। (हाँ)

(viii) मिथ्यात्व और मिश्र गुणस्थान में सम्यक्त्व नहीं होती है। (हाँ)

(ix) नैरयिक ने अतीत काल में द्रव्येन्द्रियाँ असंख्यात की है। (नहीं)

(x) चार अनुत्तर विमान के देवता भविष्य में द्रव्येन्द्रियाँ आठ अथवा सौलह अथवा चौबीस यावत संख्यात करेंगे। (हाँ)

(xi) चारित्र आत्मा में ज्ञान आत्मा की नियमा है। (हाँ)

(xii) वीर्ययुक्त आत्मा सभी संसारी जीवों के नहीं होती है। (नहीं)

(xiii) अविराधक साधक मरकर जघन्य पहले देवलोक में उत्कृष्ट सर्वार्थ सिद्ध में उत्पन्न होते हैं। (हाँ)

(xiv) आराधक साधु व आराधक श्रावक मरकर वैमानिक के अलावा अन्य गतियों में जाते हैं। (नहीं)

(xv) जो चारित्र के परिणाम से अशून्य हो, वह असंयत कहलाता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i)	शरीर	(क) इन्द्र	आहारक
(ii)	समुद्घात	(ख) अशरीरी जीवों के	मारणान्तिक
(iii)	भवनपति में उत्पन्न	(ग) 2 आत्मा	सन्नी असन्नी
(iv)	सर्वार्थसिद्ध की स्थिति	(घ) 29	उत्कृष्ट 33 सागरोपम
(v)	गुणस्थानों पर द्वार	(च) 25	29
(vi)	क्रियाओं के भेद	(छ) अघाती कर्मों की सत्ता	25
(vii)	पडिवाई	(ज) अनन्त, असंख्यात, अनन्त	11 वाँ गुणस्थान
(viii)	14 वें गुणस्थान में	(झ) 6 द्रव्येन्द्रियाँ	अघाती कर्मों की सत्ता
(ix)	नैरयिकों की द्रव्येन्द्रियाँ	(य) जघन्य भवनपति उत्कृष्ट नवग्रैवेयक	अनन्त, असंख्यात, अनन्त
(x)	कोई करेंगे, कोई नहीं करेंगे	(र) 11 वाँ गुणस्थान	संज्ञी मनुष्य की भविष्य में द्रव्येन्द्रियाँ
(xi)	चौरेन्द्रिय में	(ल) संज्ञी मनुष्य की भविष्य में द्रव्येन्द्रियाँ	6 द्रव्येन्द्रियाँ
(xii)	द्रव्येन्द्रियाँ नहीं होती	(व) मारणान्तिक	अशरीरी जीवों के
(xiii)	उपयोग आत्मा में नियमा	(क्ष) आहारक	2 आत्मा
(xiv)	असंयत देवों की उत्पत्ति	(त्र) सन्नी असन्नी	जघन्य भवनपति उत्कृष्ट नवग्रैवेयक
(xv)	पदवी	(ज्ञ) उत्कृष्ट 33 सागरोपम	इन्द्र

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मेरी जघन्य स्थिति 21 सागरोपम एवं उत्कृष्ट 22 सागरोपम है। बारहवाँ देवलोक/अच्युत देवलोक

(ii) मेरी उत्कृष्ट अवगाहना 500 धनुष है। सातवीं नारकी

(iii) मैं गुणस्थान स्वरूप थोकड़े का अठारहवाँ द्वार हूँ। लेश्या द्वार

(iv) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें आया हुआ जीव जीवादि नौ पदार्थों का जानकार, श्रद्धा-प्ररुपणा करता हुआ भी पालन नहीं कर पाता।
अविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थान/चौथा गुणस्थान

(v) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसे क्षपक श्रेणि करने वाला ही प्राप्त कर सकता है।
क्षीण मोहनीय/बारहवाँ

(vi) मुझमें क्षायिक और पारिणामिक दो भाव होते हैं। सिद्धों में

(vii) मेरे उदय से एक अलाभ परीषह होता है। अन्तराय कर्म

(viii) मुझमें 5 या 7 योग होते हैं। तेरहवाँ गुणस्थान/ सयोगी केवली

(ix) मुझमें 4 द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं। त्रीन्द्रिय में

(x) मैं भविष्य में 8,16,24 यावत् संख्यात द्रव्येन्द्रियाँ करुँगा। 4 अनुत्तर विमान के देवता

(xi) मेरी आगति के अलावा अन्य स्थानों से मनुष्य भव में आया हुआ जीव उस भव में मोक्ष में नहीं जा सकता है। केवली

(xii) मुझमें एक द्रव्येन्द्रिय होती है। एकेन्द्रिय/स्थावर

(xiii) मेरी आत्मा वाले जीव सबसे थोड़े हैं। चारित्र आत्मा

(xiv) मैं मरकर जघन्य भवनपति में उत्कृष्ट पहले देवलोक में उत्पन्न होता हूँ।
कान्दर्पिक साधु/विराधक साधु

(xv) मैं पाँच पदवियों में से 'लो' से प्रारंभ होने वाली एक पदवी हूँ। लोकपाल

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(i) हरिवास और रम्यक्वास की अवगाहना लिखिए।
जघन्य देशऊणी दो गाउ, उत्कृष्ट परिपूर्ण दो गाउ

(ii) छठी नारकी के जीवों की स्थिति लिखिए।
जघन्य 17 सागरोपम, उत्कृष्ट 22 सागरोपम

(iii) किस गुणस्थान में संज्वलन लोभ कषाय का उपशम या क्षय होता है?
सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान (दसवाँ गुणस्थान)

(iv) पाँचवें व तेरहवें गुणस्थान की स्थिति लिखिए।
जघन्य-अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट देशोन करोड़ पूर्व।

(v) भाव कितने होते हैं ? उनके नाम लिखिए।
भाव 5 होते हैं-1. औदयिक, 2. औपशमिक, 3. क्षायिक, 4. क्षायोपशमिक और 5. पारिणामिक

(vi) चौरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय में कितनी द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं ?
चौरेन्द्रिय, में 6 द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं तथा पंचेन्द्रिय में 8 द्रव्येन्द्रियाँ होती हैं।

(vii) योग आत्मा में नियमा-भजना लिखिए।

नियमा-4 (द्रव्य, उपयोग, दर्शन, वीर्य)

भजना-3 (कषाय,ज्ञान, चारित्र)

(viii) गोशालक मत के मानने वाले साधु मरकर कहाँ उत्पन्न होते हैं ?

जघन्य भवनपति में, उत्कृष्ट बारहवें देवलोक में।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) समुद्घात किसे कहते हैं, इसके भेद लिखिए।

सम्+उद्+घात, इन तीनों से मिलकर समुद्घात शब्द बनता है। एकीभाव पूर्वक प्रबलता से कर्मों का घात करना, समुद्घात कहलाता है। इसके सात भेद हैं-1.वेदनीय, 2. कषाय, 3. मारणान्तिक, 4. वैक्रिय, 5. तैजस, 6. आहारक और 7. केवली समुद्घात।

(ii) संहनन किसे कहते हैं? इनके नाम लिखिए।

हड्डियों की रचना विशेष को संहनन कहते हैं। इसके 6 भेद हैं- 1. वज्रऋषभ नाराच संहनन, 2. ऋषभ नाराच संहनन, 3. नाराच संहनन, 4.अर्धनाराच संहनन, 5.कीलिका संहनन, 6.सेवार्त्तक संहनन।

(iii) पहले और तीसरे गुणस्थान में कौन-कौनसी आत्माएँ पायी जाती हैं ? उनके नाम लिखिए।

6 आत्मा पायी जाती है- 1. द्रव्य आत्मा 2. कषाय आत्मा 3. योग आत्मा
4.उपयोग आत्मा 5. दर्शन आत्मा 6. वीर्य आत्मा

(iv) पहले से चौदहवें गुणस्थान तक पायी जाने वाली लेश्याओं को लिखिए।

पहले गुणस्थान से छठे गुणस्थान तक छह लेश्याएँ पाई जाती हैं। सातवें गुणस्थान में तेजो,पद्म और शुक्ल-ये तीन लेश्याएँ होती हैं। आठवें से बारहवें गुणस्थान तक एक-शुक्ल लेश्या ही होती है। तेरहवें गुणस्थान में एक परम शुक्ल लेश्या होती है। चौदहवें गुणस्थान में लेश्या नहीं होती है।

(v) आठवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक पाये जाने वाले चारित्र के नाम लिखिए।

आठवें, नौवें गुणस्थान में दो चारित्र होते हैं-1. सामायिक और 2. छेदोपस्थापनीय। दसवें गुणस्थान में एक सूक्ष्मसम्पराय चारित्र होता है। ग्यारहवें से चौदहवें गुणस्थान तक यथाख्यात चारित्र होता है।

(vi) वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और पहले-दूसरे देवलोक के देवों की एक जीव की अपेक्षा तीनों काल की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

अतीत काल में अनन्त, वर्तमान में आठ, भविष्य में आठ अथवा नौ यावत् संख्यात, असंख्यात, अनन्त करेंगे।

(vii) सर्वार्थसिद्ध के देवों की संज्ञी मनुष्य के रूप में अनेक जीव की अपेक्षा तीनों काल की द्रव्येन्द्रियाँ लिखिए।

अतीत काल में- अनन्त, वर्तमान में-नहीं, भविष्य में-संख्यात

(viii) द्रव्य आत्मा में कितनी आत्मा की नियमा व भजना होती है ? उनके नाम लिखिए।

नियमा-2 (दर्शन और उपयोग आत्मा)

भजना-5 (कषाय, योग, ज्ञान, चारित्र और वीर्य आत्मा)